प्रातः क्लास 2-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझा रहे हैं। एक है रूहानी बाप की मत। दूसरी है आसुरी मत। आसुरी मत बाप की नहीं कहेंगे। रावण को बाप तो नहीं कहेंगे ना। बाप मिलते ही हैं सम्पति के लिये। रावण से तो और ही सम्पति कम होती जाती है। वह है ही रावण की आसुरी मत। अभी तुम बच्चों को मिल रही है ईश्वरीयमत। कितना रात-दिन का फर्क है। बुध में आता है ईश्वरीय मत से देवी गुण धारण करते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही बाप द्वारा सुनते हो। और कोई को यह मालूम नहीं पड़ता है ईश्वरीय मत कहां ले जाती है और आसुरी मत कहां ले जाती है। यह तुम ही जानते हो। आसुरी मत जब से मिलती है, तुम नीचे गिरते ही आये हो। नई दुनिया से थोड़ा2 गिरते हो। गिरना कैसे होता है फिर चढ़ना कैसे होता है यह भी तुम बच्चे समझ गये हो। अभी श्रीमत तुम बच्चों को मिलती है फिर से श्रेष्ठ बनने लिये। तुम यहां श्रेष्ठ बनने लिये आये हो। तुम जानते हो हम श्रेष्ठ मत फिर कैसे पावेंगे। अपनी ऊंच पद तुम अनेक बार श्रीमत से पाये हो फिर पुनर्जन्म लेते2 नीचे गिरते आये हो। फिर एक ही बार चढ़ते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो होतेही हैं। बाप समझते हैं टाईम लगता है। पुरुषोत्तम संगम युग का भी टाईम है ना पूरा एक्युरेट। ड्रामा बड़ा ही एक्युरेट चलता है। और यह है बहुत वन्डरफुल। बच्चों को समझने में तो बड़ा सहज आता है। बाप को याद करना है और वरसा लेना है। बस। परन्तु पुरुषार्थ करते हैं तो कईयों को कठिन भी लगती है। इतना ऊंच ते ऊंच पद पाना कोई सहज थोड़ेही हो सकता है। है बहुत सहज बाप की याद और सहज वरसा बाप का। सेकण्ड की बात है। फिर पुरुषार्थ करने लगते हैं तो माया के विघ्न भी पड़ते हैं। रावण पर जीत पाना होता है। सारी सृष्टि पो इसी रावण का राज्य है। अभी तुम समझते हो हम योगबल से रावण पर हर कल्प जीत पहनते आये हैं। अभी पहनते भी हैं। रावण पर जीत पहनाने वाला कोई साधु सन्त महात्मा नहीं हैं। सिखलाने वाला है बेहद का बाप। भक्ति मार्ग में भी तुम बाबा बाबा कहते आये हो परन्तु पहले बाप को नहीं जानते थे। आत्मा को जानते थे। कहते थे भृकुटि के बीच चमकता है सितारा। आत्मा को जानते हुये भी बाप को नहीं जानते थे। कैसा विचित्र ड्रामा है। कहते भी थे है परम पिता परमात्मा याद करते थे फिर भी जानते नहीं थे। न आत्मा के आक्युपेशन को न परमात्मा के आक्युपेशन को पूरा जानते थे। बाप ही खुद आकर समझाते हैं। बाप बिगर कब कोई रियलाईज करा न सके। कोई का पार्ट ही नहीं। गायन भी है ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय। यूं तो सभी आत्मा ईश्वरीय सम्प्रदाय है ही। फिर पार्ट बजाने लिये ईश्वरीय सम्प्रदाय से देवी सम्प्रदाय बन पार्ट बजाते हो। यह है बहुत सहज। परन्तु यह बातें याद रहे, इसमें ही माया विघ्न डालती है। भूला देती है। बाप कहते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद करते2 जब ड्रामा का अन्त होगा अर्थात पुरानी दुनिया का अन्त होगा तब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन होती जावेगी। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। शास्त्रों से यह बातें कोई समझ न सके। गीता आदि तो इसने भी बहुत पढ़ी है। अभी बाप कहते हैं यह भी भक्ति मार्ग का भूसा है। इनकी कोई वैल्यु नहीं। लकड़ी की भुस्सी की वैल्यु क्या होगी। तो भक्ति मार्ग की कोई वैल्यु नहीं। परन्तु जब भक्ति मार्ग है तो वही चलता है। भक्ति को छोड़ते ही नहीं। बाप कितना छुड़ाने कोशिश करते हैं परन्तु छोड़ते ही नहीं। भक्ति में बहुत किचड़ा चलता है। आधा कल्प से उस पर हिरे हुये हैं। तो जल्दी थोड़ेही छोड़ेंगे। नम्बरवार ही छूटते हैं। सभी का नहीं छूट सकता। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। धंधा आदि भी कोई का रायल होता है कोई का छी छी धंधा आदि होता है। शराब बेचते हैं। यह धंधा बहुत खराब है। शराब सभी विकारों को खींचते हैं। किसको शराबी बनाना यह धंधा अच्छा नहीं। बाप राय देंगे युक्ति से यह धंधा आदि चेंज कर लो। नहीं तो ऊंच पद पा न सकेंगे। बाप समझाते हैं इन सभी धंधों में है नुकसान बिगर अविनाशी ज्ञान रत्नों के धंधे के। मल जवाहरात का धंधा आदि करते थे परन्तु फायदा तो नहीं हुआ ना। कर के लखपति बने। इस धंधे से क्या बनते हो। बाबा पत्रों में भी हमेशा लिखते हैं पदमापदम भाग्यशाली सो भी 2। जन्मों के लिये बनते हो।

1. We further report that, in accordance with the provisions of Clause 24(2)(b) of Part II of Schedule II to the Companies Act, 1956 the Assets and Liabilities of Caprihans India Limited as at 31st March, 1978, which is the last date to which the Company's Accounts

तुम भी समझते हो बाबा कहते बिल्कुल ठीक हैं। हम सो यह देवता थे। फिर पीछे चक्र लगाते2 नीचे आते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हो। नालेज तो बाप द्वारा मिली है परन्तु फिर दैवीगुण भी धारण करनी है। अपनी जांच करनी है। हमारे में कोई आसुरीगुण तो नहीं हैं। यह बाबा भी जानते हैं हमने यह अपना शरीर रूपी मकानकिराया पर दिया है। यह मकान है ना इसमें आत्मा रहती है। हमको बहुत फ्खुर रहता है। भगवान को हमने किराया पर मकान दिया है। ड्रामा प्लेन अनुसार उनको और कोई मकान लेना ही नहीं है। कल्प2 यही मकान लेना पड़ता है। इनको तो खुशी होती है ना परन्तु फिर भी हंगामा कितना मचा हुआ है। यह बाबा कब हंसी खुशी में बाबा को कहते थे हैं आप का रथ बना तो इसको इतनी गाली खानी पड़ी है। बाप कहते हैं सबसे जास्ती गाली तो मुझे मिली है। अभी तुम्हारी बारी है। ब्रह्मा को कब गाली मिली नहीं है। अभी बारी आयी है। रथ दिया है यह तो समझते हैं ना। तो जरूर बाप की मदद भी मिलेगी फिर भी बाबा कहते हैं बाप को निरन्तर याद करना, इसमें मेहनत से तुम जास्ती तीखा जाते हो। क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है ना। भल ड्रामा कह छोड़ देते हैं फिर भी कुछ लहर जरूर आती है। यह बिचारी बहुत अच्छी सर्विस करती थी। यह खराब हो गई। कितनी डिस सर्विस होती है। ऐसा2 काम करते हैं जो लहर आ जाती है। यह नहीं समझते यह तो ड्रामा बना हुआ है। यह फिर बाद में ख्याल आता है यह तो ड्रामा में नूंध है ना। माया अवस्था को बिगाड़ देती है। तो बहुत डिस-सर्विस हो जाती है। कितना अबलाओं आदि पर अत्याचार हो जाते हैं। आर्यसमाजी आदि तो हमारे बच्चे नहीं हैं ना। यहां तो खुद के बच्चे ही कितनी डिस-सर्विस करते हैं। उल्टा-सुल्टा बकने लग पड़ते हैं। बाप ने समझाया है बकना सीखना हो तो व्यासभगवान से सीखो। कितनी बकवाद लिख दी है। है तो ड्रामा परन्तु क्या बैठ लिखा है। और फिर नाम कितना बड़ा रखा है। व्यास भगवान। भगवान को तो कोई शास्त्र आदि पढ़ने का है नहीं। भगवान तो बैठ समझाते हैं। नाम रख दिया है गीता। श्रीकृष्ण भगवानुवाच है नहीं। अभी तुम जानते हो भगवान क्या सुनाते हैं। कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाते। व्यास ने क्या2 बैठ बनाई है। यह भक्ति-मार्ग के शास्त्र आदि कितना गिराने वाले हैं। बन्दर लगता है यह बनते ही क्यों हैं। हां यह भी ड्रामा में नूंध है। इसको कहेंगे भावी ड्रामा की जो इतने शास्त्र आदि बनते हैं। शास्त्रों के बिगर भक्ति कैसे हो सकती। यह भी बननी ही हैं। अभी हम श्रीमत पर कितना श्रेष्ठ बनते हैं। आसुरी मत से कितना भ्रष्ट बने हैं। टाईम तो लगता है ना। माया की युध चलती रहेगी। तुम्हारी विजय तो जरूर होनी ही है। यह तुम भी समझते हो शान्तिधाम, सुखधाम पर हम विजय पहन रहे हैं। कल्प2 हम विजय पाते आये हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही स्थापना और विनाश होती है। यह सारी डिटेल में तुम बच्चों की बुधि में है। बराबर बाप हमारे द्वारा स्थापना करा रहे हैं। फिर हम ही राज्य करेंगे। बाबा को थैंक्स भी नहीं देंगे। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा में नूंध है। मैं भी इस ड्रामा के अनुसार अन्दर पार्टधारी हूं। ड्रामा में सभी का पार्ट नूंधा हुआ है। शिव बाबा का भी पार्ट है। हमारा भी पार्ट है। थैंक्स देने की बात नहीं। शिव बाबा कहते हैं मैं तुमको श्रीमत दे रास्ता बताता हूं। और कोई बता न सके। जो भी आये वोले सतोप्रधान नई दुनिया स्वर्ग था ना। इस पुरानी दुनिया को तमोप्रधान कहा जाता है। फिर सतोप्रधान बनना है। हम भी सतोप्रधान बनने लिये दैवीगुण धारण करते हैं। बाप को याद करना है। मंत्र ही यह है। मन्मनाभव मध्याजी-भव। बस। यह भी बताते हैं। मैं सुप्रीम गुरु हूं। वह है गुरु। मैं तुमको इतना ऊंचे ले जाता हूं फिर तुमको नीचे कौन ले आते हैं? अनेकानेक गुरु। टू मेनी कुस .... भारत में गुरु कितने ढेर हैं। हरेक स्त्री का पति गुरु। कहते हैं मैं तुम्हारा गुरु ईश्वर सभी कुछ हूं फिर तुम बाहर मंदिरों आदि में क्यों जाते हो। यह यहां के ब्राह्मण लोग सिखलाते हैं। सतयुग में ऐसे कोई नहीं कहते। न कोई ब्राह्मण आदि वहां होता है। गुरु लोग क्या2 बैठ सिखलाते हैं। कितना नानसेन्स बुधि बना देते हैं। यह भी तुम अभी समझते हो। मनुष्य श्री2 ।08

2-12-62

जगतगुरु का टाईटल देते रहते हैं। परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। इतने जगद्गुरु हो कैसे सकते। जगद्गुरु तो तुम ठहरे जो याद की यात्रा से सारी सृष्टि को श्रेष्ठ सदगति में पहुंचाते हो। फिर जगतगुरु एक को कहेंगे जो तुमको भी श्रीमत देते हैं। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष हमको यह श्रीमत मिलती है। चक्र फिरता रहता है। आज पुरानी दुनिया है कल नई दुनिया। इस चक्र को समझना भी बहुत सहज है। परन्तु यह भी याद रहे जो कोई को समझा सके। यह भी भूल जाते हैं। कोई गिरते हैं तो फिर ज्ञान आदि सभी खत्म हो जाता है। काया कला ही माया ले जाती है। सभी कला निकाल कला रहित कर देती है। विकार में ऐसे फंस जाते हैं बात मत पूछो। अभी तुमको सारा चक्र याद है हम जन्म-जन्मान्तर वैश्यालय में रहे हैं। हजारों पाप करते आये हैं। सभी के आगे कहते हैं जन्म-जन्मान्तर के हम पापी हैं। हम ही पहले पुण्यात्मा थे, फिर पापात्मा बने। अभी फिर पुण्यात्मा बनते हो। यह तुम बच्चों को नालेज मिल रही है। तुम फिर औरों को दे आप समान बनाते हो। गृहस्थ व्यवहार में रहने से फर्क तो रहता है ना। वह इतना नहीं समझा सकते हैं जितना तुम। परन्तु सभी तो नहीं छोड़ सकते। बाप खुद कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनना है। सभी छोड़कर आवें तो इतने सभी बैठेंगे कहां। सन्यासी तो जाकर जंगल में रहते थे। अभी वह भी अन्दर घुसे हैं। तमोप्रधान दुनिया में आकर झूठी कोशिश करते रहते हैं। नहीं तो सन्यासियों आदि को शास्त्र आदि पढ़ने भक्ति करने का मौका नहीं। भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग तुम्हारे लिये हैं। वह न भक्ति करते हैं न उनको ज्ञान मिल सकता। उनका भगवान ही अपना है। उनको व्यास भगवान है। तुम्हारा तो यह भगवान नहीं है। बाप तो नालेजफुल है। वह कुछ भी शास्त्र आदि पढ़ते नहीं। यह शास्त्र आदि पढ़ा था। मेरे लिये तो कहते हैं गाड फादर ईज नालेजफुल। यह भी जानते हैं= नहीं है कि बाप में क्या नालेज है। अभी तुमको सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नालेज है। तुम जानते हो यह भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि भी अनादि हैं। भक्ति में यह शास्त्र आदि भी जरूर निकलनी ही है। कहते हैं पहाड़ टूट गया फिर बनेगा कैसे। परन्तु यह तो ड्रामा है ना। शास्त्र आदि सभी खत्म हो जाते हैं। फिर अपने समय पर वैसे ही बनते हैं। व्यास भगवान ने कब बनाया कह सकेंगे? तुम कहेंगे जब भक्ति शुरू हुई तब उसने शास्त्र बनाई। हम पहले2 शिव की पूजा करते हैं यह भी शास्त्रों में होगा ना शिव की भक्ति कैसे की जाती है। कितने श्लोक आदि गाते हैं। तुम सिर्फ याद करते हो। शिव बाबा ज्ञान का सागर है। जानते हो अभी हमको वह ज्ञान दे रहे हैं। बाप ने तुमको समझाया है यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। शास्त्रों में इतना लम्बा गपोड़ा लगा दिया है तो कब स्मृति में आ भी न सके। तो बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। गाया भी जाता है स्टुडन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। और कोई शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। ऊंच ते ऊंच प्राप्ति है ही यह। अडवल सिरताज बनाता हूं। और कोई शास्त्रों में यह बातें थोड़ेही हैं। ग्रंथ ही भारत में है। अभी वास्तव में नानक को भी तुम गुरु नहीं कह सकते। गुरु तो एक ही है जो सर्व की सदगति करते हैं। परन्तु गुरु मत स्थापना करने वाले को गुरु कह सकते हैं परन्तु गुरु वह जो सदगति दे। यह तो अपने पिछाड़ी सभी को पार्ट में ले आते हैं। वापस ले जाने लिये तो रास्ता बताते ही नहीं। बारात तो शिव की गाई हुई है। और कोई गुरु की नहीं। मनुष्यों ने फिर शिव शंकर को मिला दिया है। कहां वह सूक्ष्मवतन वासी, वह मूल वतन वासी। दोनों एक हो कैसे सकते। यह भी भक्ति मार्ग में लिख दिया है शंकर थोड़ेही कहेंगे मारो। यह तो नाम मात्र कह दिया है। यह तो तुम जानते हो विनाश कैसे होगा। बाकी शंकर क्या करते हैं। कैसी2 बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। शिव रहता ही है परमधाम में। शंकर है सूक्ष्मवतन में। दोनों एक कैसे हो सकते। ब्र0वि0 शं0 तीन बच्चे ठहरे ना। ब्रह्मा पर भी तुम समझा सकते हो। इनको एडाप्ट किया है। यह तो शिव बाबा का बच्चा ठहरा ना। ऊंच ते ऊंच बाप। बाकी यह है उनकी रचना। कितनी यह समझने की बातें हैं। बाप बैठ समझाते हैं मैं इनको एडाप्ट

करता हूं। यह ब्रह्मा फिर पुरुषार्थ से यह बनते हैं। कम्बाइन्ड चित्र तो कोई बन सके। दो मिलकर डांस करते हैं ना। (उदयशंकर के डांस का मिसाल) तुम बहुत कुछ समझा सकते हो। परन्तु वह भी तीर तब लगे जब कर्मातीत अवस्था हो। बाबा का कितना तीर गलता है। कहते हैं जरूर हम ऐसा बन ही जावेंगे। जितना सुनते जावेंगे सुधरते जावेंगे। सर्विस बुधि को पाती रहेंगी। थोड़ा2 तुम्हारा प्रभाव निकलता रहेगा। फिर ढेर हो जावेंगे। बहुत प्रभाव निकलेगा। बाकी मुख्य है बाप की याद। इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। बाप की याद नहीं तो चक्र भी फिरा न सकेंगे। चक्र भी फिराते रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जावे। परन्तु बाप की याद से ही यह चक्र याद आता है। बाप को भूलते हैं तो चक्र आदि को भी भूल जाते हैं। तब बाप कहते हैं यह सारा ज्ञान बुधि में रखो। कोई भी आये उनको समझाना है। तुम्हारी बुधि में सभी जमा है तब सारा ज्ञान सुनाते हो। बाबा तो तुम को आप्ते2 पढ़ाते आये हैं। पहले थोड़े ही यह म्युजियम आदि थी। चित्र भी कितने ढेर दिन प्रति दिन बनते जाते हैं। अभी तुम बच्चों को अच्छी रीत समझकर फिर समझाना भी है। बाप को याद करे तो जोहर भी भरे। मनुष्य को मारने लिये तीर होते हैं ना। तीर में जहर होता है तब मनुष्य मर जाते हैं। जहर न होगा तो जरूर जख्म होगा। इसमें तो है योगबल की बात। योगबल से तुमको यह शरीर छोड़कर जाना है। तुम्हारा यह है प्रवृति मार्ग। शास्त्र भी प्रवृति मार्ग की है। सन्यासियों का निवृति मार्ग ही अलग है। उन्होंको तो ब्रह्म में लीन होना है। वह मोक्ष को मानते हैं। बाप कहते हैं मोक्ष होता ही नहीं। यह तो सृष्टि का चक्र है जो फिरता रहता है। बाप रोज2 बच्चों को रिफ्रेश करते रहते हैं। बाप की याद करो। बाप को याद करेंगे तो फिर सृष्टि चक्र भी याद पड़ेगा। बड़े2 ऋषि मुनि तो नेती2 करते गये। अर्थात हम नहीं जानते हैं। कोई भी शास्त्र में यह नालेज है नहीं सिवाय गीता के। गीता में भी है इस राजयोग से तुम राजाओं का भी राजा बनेंगे। वहलोग तो सिर्फ शास्त्र आदि पढ़कर सुनाते हैं और कमाते हैं। करोड़पति बन जाते हैं। टीचर पढ़ानेवाले थोड़े ही इतने साहुकार हो सकते। शास्त्र बनाने वाले कितने करोड़पति हो जाते हैं। चिन्तयानन्द को कितना मिलता होगा। तुम्हारा तो यह है अपना ब्राह्मण कुल। बाप को भी तुम जानते हो और रचना के आदि मध्य अन्त को भी तुम जानते हो और पवित्र बनते हो। पतित-पावन बाप को ही सभी याद करते हैं कि हम सभी को पावन बनाओ। सदगति करने वाला भी एक ही बाप है। तुम अर्थ सहित समझाते हो कि एक शिव बाबा को याद करो। वही ऊंच ते ऊंच है। उनके लिये ही अंगुली से सभी ईशारा करते हैं। उनको भी याद करो। अभी तुम बच्चों को मालूम है ज्ञान का सागर बाप आया हुआ है। कहते हैं अपने को आत्मा समझो। मैं तुम आत्माओं का बाप हूं। मैं अभी आया हूं तुमको पढ़ाने लिये। यह नालेज अभी ही तुमको मिलती है। फिर कल्प बाद रिपीट होगी। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। म्युजियम बनाते रहते हैं। कालेज आदि तो खुलते रहते हैं। कन्यायें बहुत हिम्मत करती हैं आप समान बनाने लिये। कुमारों आदि का इकट्ठा नहीं खोल सकते। क्योंकि वह अवस्था अजन नहीं है। आग और कपास दोनों इकट्ठे रह न सकें। अच्छे2 शुरू में के आयु हुये भी बिगड़ पड़ते हैं। जिन्होंने बहुतों को नालेज दी उन्हों का भी माया भाया खराब कर देती। दूसरों के बदली और ही डिस सर्विस करते कर देते हैं। मायानाक से पूरा पकड़ लेती है। मायारूपी ग्राह ने गज को नाक से पकड़ लेती है। फिर जब बाप के सम्मुख आवे तो आप्ते2 छुड़ाया जावे। कोई को तो माया बिल्कुल ही हप कर लेती है। कोई को फिर छुड़ाने की युक्तिरची जाती है। शास्त्रों में ठीक बात है कि गज को ग्राह ने खाया। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

देहरादुन का सेन्टर बदली हुआ है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं।-

BRAHMA KUMARIS
67/8, Rajpur Road,
DEHRADUN